एहसास-ए-परमजोत

Copyright © 2018, Balwant Singh Mahraz Charwinda Das Teer Tarakkari Ji
All rights reserved.

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopy, recording or any information storage and retrieval system now known or to be invented, without permission in writing from the publisher, except by a reviewer who wishes to quote brief passages in connection with a review written for inclusion in a magazine, newspaper or broadcast.

Published in India by Prowess Publishing
YRK Towers, Thadikara Swamy Koil St, Alandur, Chennai,
Tamil Nadu 600016

ISBN-10: 1-5457-4313-4
ISBN-13: 978-1-5457-4313-3

Library of Congress Cataloging in Publication

अनुक्रमाणिका

1. प्रस्तावना 1

2. जोत जगाओ दर्शन प्यारे दी,
सब मिल जाओ लोड़ है सहारे दी।।
(21-4-2011) 3

3. प्रभ दर्शन मेरे होवा सहाई
आठ पहर तेरा नाम धिआई।।
(26-2-2017) 36

4. पारस हरि का नाम है,
नाम पावै जन कोए।।
(12-3-2017) 60

5. तुम मात पिता दर्शन प्रभ मेरे।
चेतना करूं दिन रात चेतन दे रे।।
(26-3-2017) 94

6. नानक शाह फकीर
कलिजुग तारण आया
वडे वंजारे वणज कियो
सच नाम कमाया।।
(9-4-2017) 118

7. डमरू वजावे शिव सद संगत बिठावे,
नाम जपा के गुरू भवजल पर करावे।।
(3-8-2017) 144

8. हिम्मत बख्शो दातार सुबह उठें करें इश्नान
तेरी रजा हम रहें,
उच्चे सुच्चे बणें इंसान।।
(22-10-2017) 165

9. नर नारी कुछ भेद न जापे
हर थां हर माहे नानक आपे।।
(3-11-2017) 185

10. फॅकरां दी मौज विच वसदा संसार है
संता दे सिर ते दुनिया आबाद है।।
(26-11-2017) 210

11. तेरा करम निआरा तेरा धरम निआरा
तुझ बिन नाहि मेरा कोई सहारा।।
(7-12-2017) 236

प्रस्तावना

परमपिता परमेश्वर पूर्ण संतों-महापुरूषों, पूर्ण मुर्शिद के द्वारा अपना सन्देश दुनिया को देता है। इसीलिये इन महापुरखों के द्वारा बोले गये बोल परमात्मा के सन्देश के रूप में जाने जाते हैं और उनके द्वारा रचित शबद "इलाही वाणी" के रूप में जाने जाते हैं। उनकी वाणी संसार के जीवों को दिशा प्रदान करती है। जीवन जीने की कला सिखाती है। मानव जीवन को सीध देती है। चेतना देती है। उचित-अनुचित का ज्ञान करवाती है। रूहानी मार्ग पर चलने की शक्ति देकर जीवों का आध्यात्मिक बल बढ़ाती है।

दास धर्म के धार्मिक ग्रंथ "यशवंती निराधार" में सहज अवतार महाराज दर्शन दास जी की इलाही वाणी "यशवंती निराधार-धाम पहला" के रूप में दर्ज की गई है और दास धर्म की दूसरी पातशाही महाराज चड़विंदा दास तीर तरक्कड़ी जी की वाणी "धाम दूजा" के रूप में संग्रहित की गई है। यशवंती निराधार-धाम पहला की तरह ही "धाम दूजा" की वाणी भी रब्बी नूर, रब्बी प्रकाश, रब्बी वरदानों और रहमतों से भरपूर है। क्योंकि गुरू साहब के कथनानुसार यह वाणी उन्हें सतगुरू महाराज दर्शन दास जी की असीम कृपा स्वरूप प्राप्त हुई है। जो उन्होंने स्वंय उनके अंतर बस कर उनके मुखारविंद से साध-संगत के, संसार के कल्याण के लिये, संसार को दिशा देने हेतु उच्चारित करवाई है।

गुरू साहब हमेशा फरमान किया करते हैं कि जिस प्रकार पवन से यदि पूछा जाये कि क्या आप चल रही हो तो वह कहती है कि मैं नहीं चल रही, कोई है जो मुझे चला रहा है। सूर्य से यदि पूछा जाये कि आप संसार को अपने प्रकाश से, अपने तेज के द्वारा रोशन कर रहे हो, गर्माहट प्रदान करते हो तो वह कहता है कि नहीं, मैं नहीं, कोई है जो मुझे अपना प्रकाश, अपना तेज देकर मुझे रोशनी प्रदान कर रहा है। मुझ में गर्माहट भर रहा है। जो मेरे द्वारा इस सारे संसार को मिलती है। वास्तविक तौर पर देने वाला कोई और है। इसी प्रकार संगतों के ऊपर जो भी कृपा रहमत होती है सत्संग होते हैं, यह भी करने वाला कोई और है, वाणी की रचना करने वाला कोई और है, जिसने यह सब कार्य करने के लिये मुझे चुना है। जो मेरे अंतर में बसा हुआ है और मुझ से यह सब कुछ करवा रहा है।

महाराज चड़विंदा दास तीर तरक्कड़ी जी की वाणी जितनी सहज, सुन्दर और सरल है उतनी ही गहरी, और गंभीर भी है। गुरू प्रेम-वात्सल्य से भरपूर है कहीं परमात्मा के भेदों से पर्दा उठा रही है। तो कहीं उसकी महिमा वडियाई कर रही है। उसका वन्दन गान कर रही है। कहीं सतगुरू के प्रति जीवों में विरहा जाग्रत कर रही है। "नाम दान" की महिमा करके जीवों को "नाम-शबद" से जुड़ने की प्रेरणा दे रही है। मन को ठोकर मार रही है और जीवात्मा को मन के पिंजर से आजाद होने के लिये प्रोत्साहित कर उसे शक्ति प्रदान कर रही है। जीवात्मा को उस सच्चे दरबार "सचखण्ड" पहुँचने की बात कह रही है कि यह संसार कूढ़ है, नाशवान है, क्षण भंगुर है। यहां कुछ नहीं रखा है जो साथ जाने वाला है। इसलिये जो भी क्षण आप उस परमात्मा की याद में, उसकी सेवा, सिमरन में व्यतीत करते हैं, वही सार्थक हैं।

महाराज चड़विंदा दास तीर तरक्कड़ी जी द्वारा रचित वाणी, उनकी शबद रचनायें, उनके सर्वज्ञ होने का, उनके विराट स्वरूप, उनकी पूर्णता का प्रतीक भी हैं। इसी लिये इस इलाही वाणी को भली प्रकार समझने के लिये साध-संगत ने सविनय आग्रह किया, जिसे गुरू साहब ने स्वीकार करते हुए अपनी कुछ शबद रचनाओं पर "सत्संग" के रूप में साध-संगत पर कृपा, रहमत की अमृत बरखा की है जो इस पुस्तक में प्रकाशित किये जा रहे हैं। आशा करते हैं कि समूह साध संगत जो इन सत्संगों का सामने बैठ कर श्रवण नहीं कर सकी है वह जीव, और आगे आने वाले समय में जो जीव इन पुस्तकों को पढ़ेंगे, और गुरू साहब द्वारा बताये गये मार्ग का अनुसरण करेंगे वह जीव गुरू साहब द्वारा कृपा, रहमत पा कर उस "परमजोत" का एहसास कर सकेंगे। उस अमृतव को प्राप्त कर सकेंगे। अपने जीवन को आनन्दमयी बना कर "परम पद्" की प्राप्ति कर सकेंगे।

प्रकाशन विभाग।

सतगुरू दर्शन धाम।

मुखवाक्

यशवंती निराधाम-धाम दूजा

जोत जगाओ दर्शन प्यारे दी,
सब मिल जाओ लोड़ है सहारे दी।।
सबदा भला तुसीं मंग लओ सारे,
जै बोलो राम प्यारे दी।
राम श्याम विच फर्क नहीं है,
जै बोलो नानक सिरजणहारे दी।।
डुबदी दुनिया बच जावेगी,
किरपा होवेगी शिव कल्याणकारे दी।।
जिसनूं धिआवण ब्रह्मा, विष्णु महेश वी,
जै बोलो दर्शन बख्शनहारे दी।।
सब देवीयां दा रूप है निआरा,
संता हिरदे है किया उतारा
जै बोलो काली कमली वाले दी।।
पुराण कुरान विच फर्क नहीं है
परम जोत ने है जग तारा,
वेदां ग्रंथा विच है किया उतरा।।
बोलां राहीं दुनिया तारी,
बाणी रूप दिया सहारा।।
सार वचन जो मंन जांदेने,
ओहनां दा हुंदा है पार उतारा।

सरब सांझी है बाणी उसदी,
सब थां उसने किया पसारा॥
हिन्दु मुस्लिम जो बण बण बैंहदे,
सिख ईसाई रूप जो लैंदे।
इंसानी रूप नूं भुल गए सारे,
ऐसे लई दुखां विच रुल गये सारे।
इंसानी रूप है जग में निआरा,
रब्ब नूं जो है लगदा पिआरा।
इंसानी रूप खुद रब्ब ने धारा,
बारम्बार उस लिया अवतारा॥
प्रभ दर्शन तेरा रूप है मिट्ठा,
चड़विंदा दास ने हर थां हसदा डिठा।

हूक
21–4–2011
लुधियाना डेरा।

गुरू स्वरूप प्यारी साध संगत जी,
नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला

अभी आपने उस मालिक की याद में यह "शबद" सुना है इस शबद के द्वारा उस मालिक की महिमा कितने ही रूपों में की गई है। जो जो रूप उस मालिक के घर में कबूल हुए, जिन्होंने धरती पर आकर संसार के जीवों को उस "परम जोत" के साथ जोड़ने की कोशिश की, उस "परम जोत" का रास्ता बताया। उस "परम जोत" की वडियाई, महिमा, अपने बोलों के द्वारा की, उस "परम जोत" की महिमा गाई क्योंकि वह महापुरख उस "परम-जोत" के साथ मिले हुए थे। उस "परम जोत" के द्वारा धरती पर आये, "परम जोत" को धरती पर साथ लेकर आये जिसको वाणी कहती है कि:-

चउगिरद हमारै राम कार,
दुखु लगै न भाई॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-819

राम की "कार" एक प्रकाश है, एक जोत है जो उन पूर्ण संतो के रोम-रोम से निकलती है। जिसके द्वारा अनेकों ही जीवो का उद्धार होता है जो उस जोत का ध्यान करते है। उस "जोत" की याद में ही हम गुरू घरों में जोतें जगाते है मन्दिरों, गुरूद्वारों में "जोत" जगाते हैं। चर्च में भी यदि मोमबत्ती जलती है तो उसके "नाम" की, उस जोत के स्वरूप की होती है। यदि मस्जिद में भी चिराग जगता है तो उसके "नाम" का जगाया जाता है। किसी दरगाह पर चिराग जगाया जाता है तो वह भी उसके नाम का होता है। यह सब बाहरी रास्ते, बाहरी तरीके बताये गए हैं कि यह चिराग यह जोत आप सब के अन्दर है। यदि आप धार्मिक ग्रथों के द्वारा पढ़ कर, विचार करके उनके अनुसार अपना जीवन ढाल लें, और अपनी सुरत को गुरू मन्त्र के साथ जोड़ कर, लिव जोड़ कर पाँव की तलियों से उपर उठ जायें, शबद-सुरत हो जायें,

तब आप उस "जोत" से वसल कर सकते हैं जिस "जोत" का इशारा हर गुरू घर में किया जाता है। यह बाहरी जोतें हैं लेकिन जिस जोत से हम बिछुड़े हुए हैं वह "जोत" हम सब के अन्दर जग रही है किसी ने उसको जोत कह दिया है किसी ने उसको चिराग कह दिया है। पलटु साहब ने उसको "चिराग" कहा है। उन्होंने कहा है कि आपके अन्दर चिराग जग रहा है। आप अपने अन्दर उस चिराग में जा कर मिल जाओ। उसका ध्यान करो। उन्होंने इस खोपड़ी को भी "उल्टी खोपड़ी" कह कर याद किया है। इसके अन्दर बिना तेल के, बिना बाती के चिराग जग रहा है। जो शांति देता है। सुकून देता है। जो आनन्द देता है। जिसको मिलने से अज्ञानता के अंधेरे का विनाश होता है। जब आपके इस शरीर रूपी घर में चिराग रोशन हो जायेगा, जो दसम द्वार पर है, आपके सारे घर में रोशनी हो जायेगी। आपके रोम-रोम से प्रकाश चमकने लगेगा। जो प्रकाश संतो के रोम-रोम से होता है। जो पूर्ण संतों के रोम-रोम से नाद गूंजता है जिनको पूर्ण महापुरूष या गुरुमुख भी कहा गया है। गुरवाणी में भी फरमान किया गया है कि:-

गुरुमुखि रोमि-रोमि हरि धिआवै॥

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-941

जो गुरुमुख जीव होते है उनका रोम-रोम परमात्मा का नाम जपता है। इस कारण हर जीव को गुरुमुख नहीं कहा जा सकता। गुरुमुख वही है जो रोमों से भी सिमरन करता है। बाहू साहब ने भी इन रोमों की वडियाई की है उन्होंने फरमान किया है कि:-,

मुर्शिद दा दीदार है बाहू
लक्ख करोड़ा हज्जां हू॥

हजरत सुलतान बाहू

"मुर्शिद" जिसने उस जोत का रास्ता बताया है, जिसने वह पैगाम दिया है, जिसने हमारी पीड़ाएं हरी है जिनको हम "पीर" कह कर भी याद करते हैं। पीरों के पीर

कह कर भी याद करते हैं जो आत्मा के दुखों को, मानसिक रोगों को काट देते हैं। शारीरिक रोगों को भी उड़ा देते हैं। जो हमारे अन्दर एक ऐसी जोत, ऐसी किरन पैदा कर देते हैं ऐसी आनन्दमयी शक्ति पैदा कर देते हैं आध्यात्मिक बल पैदा कर देते हैं जिसके साथ हमें कोई भी कष्ट महसूस नहीं होता। वह अंतर से उसके साथ लिव जोड़ देते हैं। लेकिन जोड़ते उसी को हैं जो उसके साथ जुड़ना चाहते हैं। सबकी लिव उसके साथ नहीं जुड़ती। सबकी सुरत नहीं जुड़ती क्योंकि हम अपनी सुरत को संसार में लगा चुके हैं। अपने ध्यान को संसार में लगा चुके हैं। महाराज दर्शन दास जी कहा करते थे कि

"लग्गी वाले ते कदे नई सौंदे,
तेरी किवें अक्ख लग गई"

जिनकी आँख उस "सतगुरू" के साथ लग जाती है भाव जिनका ध्यान उस "सतगुरू" के साथ जुड़ जाता है, उनका ध्यान या उनकी आँख फिर बाहर संसार में कहीं नहीं लगती। उनको संसार झूठा लगता है, फीका लगता है। संसार में रहते हुए, संसार को पैगाम देते हैं इस कारण वह "पैगम्बर" कहलाते हैं। मोहम्मद साहब ने उसके घर का पैगाम दिया, उनको दुनिया ने पैगम्बर कह कर याद किया। पैगम्बर की पहुँच उस प्रीतम, खुदा तक है अल्लाह तक है उस दरगाह तक है जिस दरगाह में वह जोत जगती है। इस कारण वहाँ के नाद की बात या वहां की जोत की बात वह धरती पर आकर करते हैं कि यह संसार फीका है इसमें से स्वंय को निकालने की कोशिश करो। जब अंत समय आयेगा, कयामत का दिन आयेगा, आप पुकारोगे, मैं आपको कब्रों में से उठा लूंगा। वह बाहरी कब्रें नहीं है जिनको धरती पर खोद कर मृत व्यक्ति को उसमें दफना दिया जाता है साधारण जीव इन कबरों की बात करते हैं लेकिन मोहम्मद साहब ने, पूर्ण पहुँचे हुए पीरो-फकीरों ने, इस कब्र की बात की है जो पाँव की तलियों से ले कर सिर तक की है। जो आत्मा की कब्र है। जिसको हम आत्मा का चोला भी कहते हैं जैसे हम कहते हैं कि उन संतो ने चोला बदल लिया है भाव उन्होंने चोला त्याग दिया है। अब आगे उन्होंने कोई और चोला धारण करना होगा। उन्होंने मोक्ष पा लिया है या वो जा कर, निरंकार के घर में समा गये हैं। अल्लाह में जा कर समा गये हैं। इस कब्र की बात है, कि जब अंत समय आयेगा, आखिरी दिन आयेगा, उसने उस समय आ कर सामने खड़े हो जाना है। उसे मालूम है कि हमारा अंत समय कब है क्योंकि उस पैगम्बर, उस पीर का परमात्मा के घर

में जो खाता है उसने अपना "कलाम" देकर "इलम" देकर, हम जीवों को उसके घर का रास्ता बता कर, अपने उस खाते में हमारा नाम लिखा है। जिसको हम वाणी के द्वारा दूसरे रूप में कहते हैं कि "पूर्ण संत" जिनको नाम दे देते हैं उनका धर्मराइ के घर से लेखा-जोखा खत्म कर देते हैं। जिसको वाणी में फरमान किया गया है कि,

संतन मोकउ पूंजी सउपी,
तउ उतरिआ मन का धोखा।।
धरमराइ अब कहा करैगो,
जउ फाटिओ सगलो लेखा।।

आदि ग्रंथ पृष्ठ-614

उस जीव का धर्मराइ भी कुछ नहीं कर सकता। धर्मराइ यमों को लेने के लिये नहीं भेज सकता। उसको यम लेने के लिये नहीं आयेंगे। जिनके पास "नाम शबद" है। हम इसको "नाम शबद" कह देते हैं उधर जो पीर हैं फकीर हैं वह "इलम" कह देते हैं "कलाम","कलमा" कह देते हैं या "अनहद नाद" को बाँगे-आसमानी कह देते हैं केवल भाषा का अन्तर है। वह उर्दू या फारसी में बात करते हैं हम जीव हिन्दी या पंजाबी में बात करते हैं। बात एक ही है। वह कहते हैं कि अंत समय आ कर हम इन शरीर रूपी कब्रों में से आपको (भाव रूह को) उठा लेंगे, इस कब्र में से ले जायेंगे। संत कहते हैं कि जब अंत समय आयेगा, हम आपको लेने के लिये आयेंगे आपको यम लेने के लिये नहीं आयेंगे। भाव जो "संतो" का "सतगुरू" स्वरूप है जिसे वाणी में कहते हैं कि,

गुरु मेरे प्राण सतिगुरु मेरी रासि।।

आदि ग्रंथ पृष्ठ-239-40

संतो ने जो "नाम शबद" दिया, वह गुरू का असली स्वरूप है क्योंकि उसमें "सत्त" है, लाईट है। उसमें उस "जोत" की बख्शिश है। उसमें रास्ता दिखाने वाली ताकत

है। जो पाँव की तलियों से लेकर आत्मा को ऊपर ले जाती है। सुरत को ऊपर ले जाती है भाव जीव "शबद–सुरत" हो जाता है। जब शबद का वास प्राणों में हो जाता है, उस समय प्राणों का उद्धार होता है। उसे वाणी में फरमान किया गया है कि,

मनु मंदरु तनु वेस कलंदरु
घट ही तीरथि नावा॥
एकु सबदु मेरै प्रानि बसतु है
बाहुड़ि जनमि न आवा॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ–795

गुरूवाणी में दूसरे ढंग से भी कहा गया है,
गुरु मेरे प्राण सतगुरु मेरी रासि॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ–239–40

गुरू मेरे प्राणों में है। इसे "शबद गुरू" कहा गया है। जो गुरू की याद है, गुरू का प्रेम है, गुरू के साथ जो लगन लगी हुई है, गुरू के साथ लिव जुड़ी हुई है, गुरू की सच्ची याद प्राणों में है और गुरू के "शबद" का प्राणों के अन्दर वास हो जाता है। तब प्राणों का उद्धार होता है, समझो, तब जीव इस "पिंड" को त्याग कर आगे निकल जाता है। जब जीव शबद सुरत होगा, तब इस शरीर को त्याग सकेगा। इस में से श्वास निकाल सकेगा। इसे साधना भी कहा गया है कि,

नउ दर ठाके धावतु रहाए॥
दसवै निज घरि वासा पाए॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ–124

जो जीव "शबद" की कृपा से, "इलम" की कृपा से, "कलाम" की कृपा से, गुरू की कृपा के साथ, गुरू की याद में रह कर, इन नौ दरवाजों को साध लेते हैं समझो, वह जीव साधु की अवस्था में पहुँच जाते हैं। जो "कलमा" ले कर अंतर की उस अवस्था को पा लेते हैं वह "पीर" कहलाते हैं। जो मन को मौन कर लेते हैं एकाग्र कर लेते हैं, ध्यान को एकाग्र कर लेते हैं दसम द्वार पर, वह मुनिवर कहलाते हैं। उनका मन मुनि बन गया है और "सतगुरू" ने उन को वर लिया है इसलिये कहते हैं कि वह "मुनिवर" है। क्योंकि वह वर लिये गये हैं। जिस प्रकार एक कन्या को वर कर पति (लड़का) ले जाता है तो कहते हैं कि कन्या को वर-घर मिल गया है। इसी प्रकार आत्मा को भी वह "वर-घर" मिल जाता है। "सतगुरू" वर के ले जाता है। जोगी, मुर्शिद, धरती पर आता है और वह हमें "सतगुरू" परमात्मा से जोड़ता है। जो "सतगुरू जोगी" है। जिसको आत्मा कहती है कि "मैं जाणा जोगी दे नाल," क्यों? क्योंकि जोगी धरती पर "सतगुरू" का रूप है। इस कारण कहा गया है कि "गुरू" प्राण है, और "सतगुरू" मेरी रास है। जो गुरू को प्राण बना लेता है, या अपने प्राणों में बसा लेता है, प्राण और गुरू एकरूप हो जाते हैं समझो, उन प्राणों का उद्धार हो जाता है। उस पिंड का उद्धार हो जाता है। उस आत्मा का, उस रूह का उद्धार हो जाता है। समझो, उस दसम द्वार, उस अगले घर में, जो जोत जग रही है उसमें से जो सतगुरू स्वरूप निकलता है वहाँ पर, उसके साथ आत्मा के फेरे होते हैं जिसे कहते हैं कि आत्मा को वर लिया गया है। आत्मा के फेरे हो गये हैं आत्मा का विवाह हो गया है। यह सुचज्जी नार बन गई है। जब तक आत्मा नीचे के नौं दरवाजों में है तब तक कुचज्जी है। अभी उसको अपने घर जाने का चज्ज (तरीका) नहीं आया है। उसे अपने पति परमेश्वर के साथ जुड़ने का चज्ज नहीं आया है। अपने पति "परमेश्वर" से प्रेम करने का तरीका नहीं आया है, जिस प्रेम की बात गुरू गोबिन्द सिंह महाराज ने की है। उन्होंने फरमान किया है कि,

साचु कहउ सुनि लेहु सभै,
जिनि प्रेमु कीओ तिन ही प्रभु पाइओ॥

9॥ 39॥ सवय्ये पातशाही-10

उस प्रेम की बात महापुरूषों ने की है। जिस प्रेम में वह रीझता है। उसको रिझाने का तरीका आना चाहिए। जो गुरू नानक साहब ने फरमान किया है कि सुचज्जी नार बनना पड़ेगा। उसके घर में कुचज्जीओं का कोई काम नहीं है

मंञु कुचजी अंमावणि डोसड़े
हउ किउ सहु रावणि जाउ जीउ॥
इक दू इकि चड़ंदीआ
कउणु जाणै मेरा नाउ जीउ॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-762

कि उसके घर में एक से एक चढ़ते भगत पड़े हैं। आत्मिक तौर पर कह लें, कि एक से बढ़कर एक काबिल नार है, जो उसके गुण ग्रहण करती है। उसके हुक्म की रज़ा में आ जाती है। उसके भाणें में आ जाती है, वह उनको साथ लेकर जायेगा। वह कह रहे हैं कि हम कुचज्जियों को वहाँ कौन पूछेगा? यह गुरुवाणी उन्होंने हम, संसार के जीवों को दी है कि आप इसे पढ़े, विचारें, इसके अनुसार चलें। चाहे वह वेदों की वाणी है या ग्रथों की है, चाहे वह पुराण या कुरान में है। पुराण, कुरान, यह सब अन्दर की अवस्था है। "यशवंती निराधार" क्या है? यह एक आध्यात्मिक अवस्था "आत्मा" का असल स्वरूप बाहर बताया गया है । आत्मा की महिमा की गई है। जब आत्मा महा-आत्मा का रूप धारण कर लेती है, तब हम कह सकते हैं। उस "यशवंती" नार की बात हम कर सकते हैं महाराज दर्शन दास जी ने अपनी वाणी के लिये फरमान किया है "यशवंती निराधार-धाम पहला।" उन्होंने एक ऊँची अवस्था, एक सुचज्जी नार की बात की है। उसकी महिमा की है। उसको पढ़ने की बात की है। जिस प्रकार महाराज दर्शन दास को जिन्होंने पढ़ लिया, कि उनका जीवन क्या था? उनका इतिहास क्या था? उन्होंने धरती पर आ कर क्या किया? उनकी वाणी क्या है? या उन्होंने कौन-कौन से कार्य किये? "नाम" जपाया, नाम जपा या धर्म का मार्ग दिया, उस रास्ते पर चलाया, लोक भलाई के कर्म किये। उनको जान कर, पढ़ कर जिन्होंने महाराज दर्शन दास को पढ़ लिया, समझो, वह जीव उनके अनुसार जीवन ढाल गये, वह सुचज्जी नार का रूप धारण कर सकते हैं। जिन्होंने "राम" को पढ़ लिया, समझो वह राम में जा कर समा सकते हैं। जिन्होंने "श्याम" को पढ़

लिया, वह "श्याम" में जाकर समा सकते हैं लेकिन इस "शबद रचना" में यह कहा गया है कि "जय बोलो राम प्यारे दी," बात उस "राम" की है,उस "श्याम" की है जो स्वंय ही "दाता" है, "निंरकार" है। जो उस "राम" की ड्यूटी में धरती पर आये, उनको चाहे हमने "राम" कह दिया या "श्याम" कह दिया, चाहे "नानक" कह दिया, या जिन में से वह प्रकाश, वह जोत नज़र आई, उनको हम कहते हैं कि ये भगवान है। गुरू नानक पातशाह जो कि स्वंय इतनी बड़ी ताकत धरती पर आये, उन्होंने भी कह दिया कि

सच खंडि वसै निंरकारु॥
करि करि वेखै नदरि निहाल॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-7-8

कि वह निंरकार 'सचखण्ड' में है। 'सचखण्ड' एक अवस्था है जहाँ प्रकाश ही प्रकाश है। उस अवस्था की बात की गई है। हमने उस जोत में जा कर समाना है जिसे कहा गया है

जय बोलो राम प्यारे दी

यशवंती निराधार-धाम दूजा

"एक राम दशरथ घर डोलै।
एक राम घट घट में बोलै।
एक राम का सकल पसार।
एक राम त्रिभुवन ते न्यारा॥

संत कबीर साहब

एक "श्री राम" जो त्रेता युग में आये, उस से पहले भी न जाने कितने युग बीत गये। यह बात नहीं है कि यह जो चार युग हैं इन से ही सृष्टि शुरू हुई है। यह युग तो पता नहीं कितनी बार आकर चले गये। जब चारों युग हज़ार-हज़ार बार आ कर चले जाते हैं फिर प्रलय आ जाती है। यह सृष्टि समाप्त हो जाती है। अब आप हिसाब लगाओ कि कितने लाखों, करोड़ों साल तक यह युग रहते हैं। परमात्मा इतनी जल्दी अपनी सृष्टि को समाप्त नहीं करता। वह जो "परम जोत" है, जिसे वह "राम" कहा गया है जो हर घट में बैठा है, हर शरीर के अन्दर बैठा है उसकी महिमा की गई है। "त्रेता युग" में जो "राम" आये, जो मर्यादा पुरूषोत्तम कहलाये, उन्होंने भाईचारा सिखाया है। उन्होंने न्याय करना सिखाया है। उन्होंने वचन निभाना सिखाया है कि

रघुकुल रीत सदा चली आई,
प्राण जायें, पर वचन ना जाये॥

यदि प्राण जाते हैं तो जायें, लेकिन जीव को अपने वचनों से पीछे नहीं हटना चाहिये। वचनों का कच्चा नहीं होना चाहिये। जो जीव वचनों का कच्चा है समझो, वह पक्के के साथ कभी नहीं जुड़ सकता। साधारण व्यक्ति भी कह देते हैं कि आजकल के संतो की कच्ची वाणी है यदि कोई वाणी उच्चारता है। जिस व्यक्ति की जीह्वा पर झूठ है, जिसके मन में झूठ है, मन में "काल" का पहरा है, मन के अन्दर शैतान बसा हुआ है, मन में विकारों का डेरा है, वह तो वैसे ही हर जगह पर जो बोलता है, कच्चा बोलता है। कच्ची बातें करता है। यह उनकी बात कही जा सकती है।

परमेसरि दिता बंना॥
दुख रोग का डेरा भंना॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-627-28

दु:ख-रोग तब समाप्त होते हैं जब "सतगुरू" सहारा दे दे, "सतगुरू" का सहारा "गुरू शबद" है। "सतगुरू" का सहारा सच्ची याद है, "सतगुरू" का सहारा "गुरू" का मिल जाना है या गुरू का प्राणों में बस जाना है जो एक बहुत बड़ा सहारा है।

गुरू गुरू गुरु करि मन मोर॥
गुरू बिना मै नाही होर॥
गुर की टेक रहहु दिनु राति॥
जा की कोइ न मेटै दाति॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-864

जब "गुरू" का सहारा मिल जाये, हर समय यह मन "गुरू" को याद करे, इस ध्यान में हर समय, "गुरू" ही बैठा हो और "गुरू" की सोच में जब सेवक अपनी सोच मिला लेता है, "गुरू" की सोच को अपने अन्दर उतार लेता है समझो, तब वह स्वंय "सतगुरू" का स्वरूप बन जाता है। "सतगुरू" स्वरूप में जा कर समा जाता है। तब प्राणों का उद्धार होता है। इस कारण, श्री राम आये उन्होंने मर्यादा सिखाई, भाईचारा सिखाया, वचन निभाना सिखाया, जो वचन निभाना जानते हैं समझो, उनका मन सुच्चा है। मन में भय है, मन में प्रीत है, मन में सतगुरू की सच्ची याद बसी हुई है। वह जब भी बोलेंगे, सही बोलेंगे। जब भी बोलेंगे, उनकी जुबान पक्की होगी। जैसे, कहते हैं कि इसकी बोलबाणी कैसी है? दूसरा व्यक्ति कहता है कि इसकी बोलबाणी बहुत खराब है। यह पता नहीं क्या-कुछ बोल देता है समझो, यह जहाँ भी बोलेगा, वहाँ पर लड़ाई-झगड़ा ही होगा। वाणी तो सबके अन्दर है। जो हम बोलते है उसको वाणी कहा गया है लेकिन गुरू वाणी किसे कहा गया है? जिस हृदय में, जिस मन में वह "जोत" जग रही है उस "जोत" का वास हो गया है। क्योंकि "जोत" ही, "रोशनी" ही एक ऐसी शक्ति है जो हमें राह दरसाती है। 'गु' भाव अंधेरा, 'रू' भाव रोशनी, जो शक्ति अंधेरे से जीव को रोशनी में ले जाये, जो शक्ति अज्ञानता को समाप्त कर दे, हमें रोशनी में ले जा कर खड़ा कर दे, समझो उसको 'गुरू' कहा गया है। जिसके अन्दर वह शक्ति कार्य करती है जिसको 'परम-जोत' कहा गया है।

परम-जोत ने है जग तारा,
वेदां ग्रंथां विच है किया उतारा॥

यशवंती निराधार-धाम दूजा

जब संतों के हृदय में उसका उतारा हो जाता है "संत" कौन? जिसके हृदय में दया, सत्त, संतोख, नाम बसा हुआ है। यह गुण हैं। इन गुणों के कारण उन को "संत" कहा गया है। कि इन गुणों का उन्होंने चोला डाला हुआ है। बाहरी चोला नहीं, कि नीला चोला डाल लिया, भगवां चोला डाल लिया, सफेद चोला डाल लिया, हरा चोला डाल लिया, संत-फकीर बन गये। "संत" "दया, सत्त, संतोख, नाम" का चोला पहन कर बनता है। जिसे हम धर्म का चोला कह देते हैं। "नाम" का चोला कह देते हैं "लाल" रंग का चोला कह देते हैं।

"हरि रंगि राता, सो मनु साचा॥
लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-194

जो लाल रंग में, राम के रंग में रंगा गया है पूर्ण पुरख, विधाते के रंग में रंगा गया है समझो वह "संत" है। जो अंतर से "सच" के साथ भरपूर हो गया है। उसके अन्दर ही "संतोष" आ सकता है उसके अन्दर ही दया आ सकती है जो दया के सागर के साथ अंतर से जुड़ गया है। "अनहद नाद" के साथ जुड़ गया है। वह "नाम" जो "नौ निद्धि" नाम है। जो अनहद नाम है। जिसे "बांगे असमानी" कहा गया है। जब जीव उसके साथ जुड़ गया, यह चारों गुण पूरे हो गये, तब जीव "संत" का रूप कहा गया है, उसके घर कबूल हो गया है। जैसे समुन्द्र में अनेकों ही हीरे समा जाते हैं। जब समुन्द्र छल मारता है तो उस छल के साथ हीरा बाहर आ कर गिरता है। वह किसी के हाथ लग जाये, समझो उसका जीवन तर गया। इसी प्रकार वह 'संत' रूपी हीरों को अपनी गोद में रखता है। परमात्मा रूपी समुन्द्र अपने अन्दर समेट लेता है। जब भी धरती पर भेजता है समझो, वह स्वंय 'प्रकाश' रूपी कार, वह 'जोत' साथ आती है।

तू सत्त दा समुंदर है मेरे दिल दे अंदर है
लोकां तों छुपा के रखदां तू मस्त कलन्दर है॥

यशवंती निराधार-धाम दूजा।

साधारण जीव बाहरी शराब की बात करता है। संत उस शराब की बात करते हैं उस खुमार की बात करते हैं जो "नशा" एक बार चढ़ जाये तो कभी उतरता नहीं है। जिसके ऊपर वह राम का रंग एक बार चढ़ गया, वह कभी उतर नहीं सकता, चाहे जीव देगों में उबल जाये या आरे के साथ उसे चिरना पड़ जाये। बंद-बंद कटवाना पड़ जाये, लेकिन उसका रंग नहीं उतर सकता। वह ऐसा रंग है, उस रंग में रंगे जाने को मन चाहता है, जिन प्यारों को वास्तव में वह प्रेम हो गया है। जिनके अन्दर वह इश्क जाग गया है। जो "एक" का होगा, एक के साथ जुड़ेगा, एक का ही हो कर रह जायेगा। जो कहता है कि तू मारदे या रख ले, मैं बस तेरा हूँ। जिसका मन केवल एक के साथ जुड़ गया है। जो जोत जन्म-मरण से रहित है उसकी बात की गई है। उस एक को सिमरने की बात है साधारण जीव कहता है "साध संग," साधु कोई भी हो, लेकिन क्या पहचान है कि कोई "साधु" है? जो अधूरा ही टूट गया, वह साधु कैसे हो सकता है? जो अभी उससे जुड़ा ही नहीं है, "सतगुरू जोगी" में समाया ही नहीं है यदि सारे ही साधु पूर्ण हैं तो अधूरों की बात क्यों की जाती है? "पूर्ण संत" पूर्ण गुरू की बात इसलिये की जाती है क्योंकि दुनिया में अधूरे बहुत है। कहते हैं कि "कोटन में कउ एक नारायण कै चीत" करोड़ों में कोई एक "पूर्ण" बताया गया है। लेकिन यदि किसी ने उद्धार करवाना हो, यदि किसी ने उसमें जा कर समाना हो, तब तो "पूर्ण" की तलाश करो, जिसे सच्चा प्रेम हो, सच्ची लगन हो, उसे उसकी तलाश होती है कि:-

कोई अणि मिलावै मेरा, प्रीतमु पिआरा,
हउ तिसु पहि आपु वेचाई॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-757-58

कि कोई मुझे उसका प्यारा मिल जाये जो मुझे उस प्रीतम से मिला दे। कोई बख्शनहार मिल जाये, कोई बख्शा हुआ मिल जाये, जिसे फरीद साहब कहते है कि,

उठ फरीदा सुतेया दुनिया भालण जा,
जे कोई मिल जाये बख्शेया,
तू वी बख्शेया जा॥

शायद तुझे कोई ऐसा मिल जाये जिसे परमात्मा ने बख्श दिया है और अपनी बख्शिश करके परमात्मा ने अपना सब कुछ उसमें भर दिया है। अपनी जोत उसके अन्दर रख दी है। वह तुझे भी बख्श सकता है क्योंकि वह "परम-जोत" ही बख्श सकती है, और कोई नहीं बख्श सकता। फरीद साहब ने उसकी बात की है। जीव "वाणी" को पढ़ते हैं, माथा टेकते हैं लेकिन वाणी को समझना कठिन है क्योंकि "गुरूवाणी" है। यदि किसी ने गुरू को ही नहीं समझा, तो उसके बोलों को, उसकी वाणी को कोई कैसे समझ सकता है?

बाणी गुरू, गुरू है बाणी,
विचि बाणी अंम्रितु सारे॥
गुरु बाणी कहै, सेवकु जनु मानै,
परतखि गुरू निसतारे॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-982

वह प्रत्यक्ष, सामने तो तभी आकर खड़ा होता है यदि सेवक उस "गुरूवाणी" को मानता है। जिसका मन मान गया, समझो, वह भव पार हो गया।

मंने की गति कही न जाइ॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-3

जिसने अभी उसे माना ही नहीं है, उसका रास्ता कैसे खुल सकता है? उसकी गति कैसे हो सकती है? जीव कहते हैं कि उसकी गति नहीं हुई है, वह भटकता फिर रहा है। जिसका मन जीवित रहते भटकता है तो मरने के बाद कैसे नहीं भटकेगा? मरने के बाद उसे कौन ले जायेगा? कैसे उसका पार उतारा हो जायेगा? जिसका जीवित रहते किसी पर मन नहीं माना, या कोई बख्शा हुआ उसे नहीं मिला, तब फिर उसे कौन बख्शेगा? कोई बख्शनहार चाहिये जिसे उस खुदा ने, उस निरंकार ने बख्शा हुआ है और वह आगे बख्श सकता है। उसे कहते हैं कि उन "संतो" ने अपना चोला छोड़ा

और अपनी बख्शिश, उस व्यक्ति पर कर दी है। क्यों? क्योंकि वह आगे बख्श सकते हैं। उन्होंने अपने वरदान, जो उनके पास थे, दूसरे व्यक्ति को दे दिये हैं। उन्होंने हुक्म करके अपने उस सेवक को गद्दी बख्श दी है। महाराज जी कहते हैं कि यदि वह कहीं पूर्ण हुक्म कर दें, तो वहाँ उनको स्वंय कार्य करना पड़ता है। जहाँ कहीं वह पूर्ण वरदान दे दें, वहाँ भी उनको स्वंय कार्य करना पड़ता है। भाव उन्होंने केवल चोला बदला है लेकिन वह दूसरे चोले में आकर कार्य कर रहे हैं। उनके वरदानों को, वाणी को पक्के वरदान, पक्की वाणी कहा गया है। यदि किसी सरोवर को वरदान दे दिया, उसमें आज भी वह शक्ति वैसे ही काम कर रही है। यदि गुरू नानक साहब ने कह दिया है कि यह दीवार युगों तक नहीं गिरेगी, तो वह दीवार आज भी कायम है। उसको पक्की वाणी कहा गया है। यदि महाराज दर्शन दास जी ने यह वचन कर दिया है कि इस सरोवर में से यह रहमतें मिलेंगी, तो वह मिलती है। "सतगुरू दर्शन धाम" में सरोवर बनाया है, वहाँ महाराज दर्शन दास जी आज भी हाजिर नाजिर हो कर काम करते हैं। अपने गद्दी नशीन को मिलते हैं, आगे कृपा करते हैं या आगे कृपा, बख्शिश, रहमतें की जाती हैं समझो, वह बख्शिश करता है। मेरे जैसा सेवक बख्शिश नहीं कर सकता। क्योंकि बख्शिश करने वाली शक्ति है जिसने सेवकों को बख्श दिया। बख्श कर आगे बख्शिशें कर दी, वह ताकत है। आगे किसे हक दिया गया है? वह तो केवल देने वाला जानता है या जिसके द्वारा दिया गया है वह जानता है। या जीव का अंतर का रंग उस पर कितना चढ़ा है? वह कौन से रंग में रंगा हुआ है? या उसका वतीरा (व्यवहार) क्या है, उसके बोल, बाणी, वचन क्या है? दुनिया में उसका चाल-चलन क्या है? दुनिया में उसका खान-पान क्या है? उसका उठना-बैठना क्या है? जो स्वंय वचनों पर नहीं रहा, वह दूसरे को वचनों पर क्या चला सकता है? इस कारण श्री राम चन्द्र जी ने फरमान किया है कि

प्राण जाये पर वचन ना जाये

वचन से जीव पीछे नहीं होना चाहिये। उसका वचन पक्का होना चाहिये। महाराज दर्शन दास जी ने भी फरमान किया है कि आप "वचन" अपने भाई से कर लेते हैं, अपनी बहन से कर लेते हैं, या मित्र से कर लेते हैं, गुरू से कर लेते हैं, माता-पिता से कर लेते हैं। जो वचन आप करते हैं, उससे कभी भी पीछे नहीं हटना चाहिये चाहे आपका सब कुछ चला जाये। आप वचनों के पक्के रहो। यदि आप वचनों के पक्के हैं तो जैसे कहा गया है कि उस "राम" का रंग पक्का है तो आपके ऊपर राम का

रंग जरूर चढ़ेगा। जो राम की याद में डूबेंगे, वह भव-पार होंगे। जो उस राम की याद में डूबते हैं उनको वह पार लगाता है। यह उस श्री राम की बात है जो त्रेता युग में आये। आगे उस राम की बात है जो हर "घट" में समाया हुआ है। एक राम "संतन" रूपी राम है। वह "राम" जो हमें गुरू स्वरूप में, सपनों में आ कर मिल जाता है। गाइड कर जाता है। आगे जीव उस इशारे को समझे या न समझे लेकिन वह आ कर आवश्य मिलता है। जो सेवक अपने गुरू को याद करता है, और गुरू जब सपने में आ कर मिलता है तो समझो कि यह उसका "सतगुरू" स्वरूप है। वह उसका "जोत" स्वरूप है जिसके अन्दर उसकी सच्ची याद उतर आती है समझो, वह याद ही जोत के साथ मिलाती है। जिसके अन्दर सच्ची याद नहीं है वह उस जोत के साथ नहीं मिल सकता। जो जीवित रहते अपने अन्दर सच्ची जोत नहीं उतार सका, जीवित रहते उस सच्ची जोत से नहीं मिल सका जो उस मालिक ने सबके भीतर रखी है वह बाहरी जोतें जगा कर, शरीर छोड़ कर जा सकता है। जीव की मृत्यु होती है हम लोग उसके सिरहाने एक दीया जला कर रख देते हैं। कोई बच्चा पूछता है कि यह दीया क्यों जगाया है तब कहते हैं कि यह पूरा हो गया है। इसकी आत्मा इस जोत में समा गई है। संतों ने अन्दर की "जोत" की बात बताई है दुनिया बाहर की जोतों में फंसी हुई है। केवल वहीं तक सम्बन्ध रखती है कि वहाँ चिराग प्रज्वलित कर आयें। संत यह नहीं कहते कि अपने घरों में जा कर जोतें जगाओ। यह तो केवल याद दिलाने के लिये है। जैसे पहली कक्षा के बच्चे को पाठशाला में पुस्तक में बताया जाता है कि A for Apple और वहाँ पर Apple की तस्वीर बनाई होती है कि Apple, सेब इस प्रकार का होता है ताकि उस के दिमाग में बैठ जाये कि यह Apple है। यदि "आम" लिखा है तो आम की तस्वीर बनाई गई है "केला" लिखा है तो केले की तस्वीर बनाई गई है इसी प्रकार अन्य वस्तुओं, जानवरों इत्यादि की तस्वीर बनाई होती है वह केवल समझाने के लिये है। यदि हम इन जोतों तक रह गये हैं इसका अर्थ है कि हम उन बच्चों की तरह पहली कक्षा में बैठे हैं। वह यह नहीं कहते कि घर में यह जोत न जगाओ। वह कहते है कि आपके अन्दर जो "जोत" जग रही है जो इस वाणी के द्वारा बताई गई है आपने उस "जोत" के साथ जा कर मिलना है। लेकिन कैसे मिलोगे? "शबद" की कमाई करोगे, "शबद सुरत" हो जाओगे, आपकी आत्मा पाँव की तलियों से ऊपर चली जायेगी। दसम द्वार पर पहुँचोगे, वहाँ जा कर आप उस जोत में समाओगे। तब आपकी जिन्दगी का कार्य पूरा हो जायेगा। वरना उससे पहले कर्म पूरा नहीं होता। इस "शबद रचना" में साथ-साथ यह भी बताया गया है कि जो रूप अगले घर में परवान है

जय बोलो नानक सिरजन हारे दी

यशवंती निराधार-धाम दूजा

"नानक" उस निरंकार को कहा गया है जिसके घर में कोई "न" नहीं है। महाराज दर्शन दास जी कहा करते थे कि मेरे नानक के घर में "न" नहीं है। जहाँ सब कुछ मिलता है। जहाँ से युगों से मिलता आ रहा है मिल रहा है और मिलता रहेगा। उसकी महिमा की गई है। यदि 'शिव' की महिमा इस शबद में की गई है कि,

किरपा होवेगी शिव कल्याणकारे दी॥

यशवंती निराधार-धाम दूजा

तो वह "शिव" है जिसे गुरूवाणी कहती है कि,

सिव रूपी करता पुरखु
चले नाही धरति चलाई॥
सिध तंत्र मंत्रि करि झड़ि पए,
सबदि गुरू के कला छपाई॥
ददे दाता गुरू है,
कके कीमत किने न पाई॥

वार-1, पउड़ी-42

यह शिव रूपी कर्ता पुरख है भाव उस "निरंकार" को अनेकों ही रूपों में याद किया गया है। बताया गया है कि "राम" और "श्याम" में कोई अन्तर नहीं है भाव वह भी एकरूप हैं। एक दूसरी शबद रचना में भी हमने कहा है जो हमें महाराज दर्शन दास जी ने आकाशवाणी दी है कि,

मंदिर अंदर गुरू नानक देखा,
गुरूद्वारे राम।।
प्रभु प्यारे एक भये हैं
मनमुख ना सके पछाण।।

यशवंती निराधार-धाम दूजा

मनमुख जीव राम को अलग समझते हैं, गुरू नानक को अलग समझते हैं। जबकि वह प्रभु प्यारे तो एक ही रूप हैं। भाव एक ही आसन पर हैं एक ही जगह पर हैं। जिस "राम" की महिमा की जाती है कि वह मन रूपी मन्दिर में रहता है।

मनु मंदरू तनु वेस कलंदरु
घट ही तीरथि नावा।।

आदि ग्रंथ-पृष्ठ-795

कहते हैं कि यह उस राम का मन्दिर है। उस परमात्मा का मन्दिर है उस "राम" में और "गुरू नानक" के अन्दर कोई अन्तर नहीं है। लेकिन हमारे मन में अन्तर है। उन्होंने इन्सानी चोले की महिमा की है इन्सान की महिमा गाई है लेकिन हम संसार में हिन्दु-मुस्लिम बन कर बैठे हैं

हिन्दु मुस्लिम जो बण बण बैहंदे,
सिख ईसाई रूप जो लैंदे।।
इंसानी रूप नूं भुल गए सारे,
ऐसे लई दुखां विच रूल गये सारे।।

यशवंती निराधार-धाम दूजा

इसी कारण सारी दुनिया दुखों में फंसी हुई है। मुसीबतों-परेशानियों में फंसी हुई है। किसी को कोई रोग है किसी को कोई रोग है। गुरवाणी फरमान करती है कि,

जो जो दीसै सो सो रोगी,
रोग रहित मेरा सतिगुरु जोगी॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-1140-41

जिस ओर भी देख लें सब ओर रोग ही रोग नजर आते है। रोगों से रहित कौन है? "सतगुरू जोगी" दसम द्वार की बात गई है जहाँ वह "जोत" है उस में से "सतगुरू" के दर्शन होते हैं। उस "सतगुरू" ने गुरू को कबूल किया है। उस "गुरू" के अन्दर अपनी जोत रखी, इस कारण वह जोत "गुरू" का ही रूप लेती है जब जीव वहाँ पहुँचता है तब कहता है कि यह मेरे "सतगुरू" हैं। जिन्होंने उसको अपने अन्दर से देख लिया, वह अपने गुरू को जीवित रहते ही "सतगुरू" का रूप दे देते हैं। जैसे वाणी में फरमान किया गया है

आपि नराइणु कलाधारि
जग महि परवरियउ॥
निरंकारि आकारु जोति
जग मंडलि करियउ॥

सवईऐ महले तीजे के आदि ग्रंथ पृष्ठ-1395

उन्होंने कहा है "नारायण" स्वंय "गुरू नानक" बन कर धरती पर आ गया है। क्योंकि जिन्होंने जो देखा, वह कह दिया। जो किसी के पीछे लग कर ऐसे ही कहता है तो वह किसी के पीछे लग कर हट भी जाता है इस कारण यदि उसके साथ जुड़ना है तो एक सच्ची याद अपने अन्दर पैदा करो। यह सच्ची याद ही

आपको उस सच्ची "जोत" के साथ जोड़ेगी। उस सतगुरू के साथ जोड़ेगी और वह सतगुरू आपकी सच्ची याद को देख कर आपको अंतर से दर्शन देगा। जब अंतर से दर्शन हो जायेंगे, वह अपना रंग चढ़ा देगा, फिर वह रंग कभी भी नहीं उतरेगा। आप उससे जुड़े हुए कभी भी नहीं टूटेंगे। क्योंकि वह "टूटी गाँढनहार गोपाला" है वह ऐसा गोपाल है जो टूटे हुओं को गाँठ देता है जो रूहें, जो आत्मायें उससे बिछड़ गई, उससे युगों से टूट चुकी है वह उनको जोड़ने के लिये आता है। इस कारण वह "सतगुरू जोगी" कहलाता है। उसी को ही "परम-जोत" कहा गया है कि "परम-जोत ने है जग तारा" वह परम-जोत संतो के हृदय में उतरती है उसे यह भी कहा गया है कि

सब देवीयाँ दा रूप है निआरा

समझो, जितने भी देवी देवता हैं सब उसने ही धरती पर भेजे हैं, उसने ही बनाये हैं। जब वह स्वंय धरती पर साकार रूप लेकर, मानव रूप धारण करके आता है जिसे कहा गया है कि

इंसानी रूप खुद रब ने धारा।।

कि उसने जब भी रूप धारण किया है 'इन्सान' का रूप लिया है। उसको यह रूप प्यारा लगता है गालिब साहब भी कहते हैं कि,

बदल कर भेस फकीरों का,
ए गालिब तमाशा अहले करम देखता है।।

वह फकीरों का भेस बदल कर संसार में अपनी ही रची हुई लीला देखने के लिये आता है। अपने ही संसार को देखने के लिये, अपने भक्तों, अपने प्यारों को देखने के लिये, अपने प्रेमियों को या जितने भी जुल्म करने वाले हैं अत्याचार करने वाले हैं या सृष्टि पर क्या हो रहा है? या अपने रूप को देखने के लिये, स्वंय ही किसी ऋषि-मुनि का रूप धारण करके, पूर्ण संतो का रूप धारण करके आता है जिसे पक्का संत कहा गया है।

नानक कचड़िआ सिउ तोड़ि,
ढूढि सजण संत पकिआ॥
ओइ जीवंदे विछुड़हि,
ओइ मुइआ न जाही छोड़ि॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-1102

जो साधारण लोग हैं वह तो जीवित रहते ही साथ छोड़ जाते हैं इसलिये कोई पका हुआ संत सज्जन ढूंढ, जो अगले घर तक, धुर दरगाह तक साथ दे। आप हजारों मील दूर बैठे हो, लेकिन आपके अन्दर उसकी सच्ची याद है। आपको वह दूर बैठा भी दर्शन दे दे, आपके सवाल का जवाब दे दे। कोई ऐसा पका हुआ संत चाहिये जो उसके घर में कबूल हो चुका है जिसे उस शक्ति ने, उस जोत ने बख्शा हुआ है और जोत ने, उस शक्ति ने, स्वंय को उसके अन्दर रखा हुआ है स्वंय उसके अन्दर उतर गई है समझो, उस रूप के दर्शन हजारों मील दूर बैठे भी हो सकते हैं। ऐसा पूर्ण संत, पक्का संत चाहिये। जिसे अपने खसम की बात करते हुए कोई डर, भय नहीं होता। जो निडर है, निरभउ है, निरवैर है, उसका किसी से वैर भी नहीं है और कोई भय भी नहीं है किस चीज़ का भय है? जिसका साहिब डाढा है उसको किसका डर है?

जिस दा साहिबु डाढा होइ॥
तिस नो मारि न साकै कोइ॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-842

उसको तो कोई मार कर भी मार नहीं सकता। महाराज दर्शन दास जी को गोली मार कर भी मार नहीं सका। वह तो आज भी उसी प्रकार कार्य कर रहे हैं जिसका नाम "महाराज" है जिसका नाम "संत" है उस शक्ति को कोई नहीं मार सकता। यह शरीर तो नाशवान् है। वह तो स्वंय ही शहादत देने के लिये तैयार रहते हैं। वह मज़लूमों की खातिर, जिन पर अत्याचार होता है उस को शांत करने की खातिर, शैतान की अग्नि को शांत करने के लिये धरती पर आते हैं। तुलसी साहब फरमान करते हैं कि,

अग्नि चढ़ी आकाश पर बरस पड़े अंगार।
संत ना होते जगत में तो जल मरता संसार।।

यदि ऐसी शक्तियां धरती पर न हों तो सारा संसार जल कर राख हो जाये। वह स्वंय शहादत देते हैं वह स्वंय कहते हैं कि मारो, यदि तुम मार सकते हो तो मारो। भाव उन जीवों की कम अक्ली है जिन्हें पता ही नहीं कि हम क्या कर रहे हैं। अपने ऊपर भार चढ़ाना, एक कीड़े को भी मारना, जिसको जीव जीवित नहीं कर सकता, वह भी पाप है। उसे मारने का कोई हक नहीं है। एक पक्षी को मार देना, जिसे जीव मार कर जीवित नहीं कर सकता, उसे मारने का कोई हक नहीं है। अपनी जिह्वा के स्वाद के लिये एक बकरे को काटने का किसी को कोई हक नहीं है। भाव सब जीव अपनी जीह्वा के स्वाद के लिये अत्याचार करते हैं या क्रोध में, अंहकार में दूसरे को मारते हैं। यदि इन जानवरों को मारने का इतना पाप हो सकता है तो एक इन्सान को मारना कितना बड़ा पाप है? एक आम आदमी को मारने का इतना बड़ा पाप है कि जीव उसका भुगतान नहीं कर सकता। यह जन्म और मरण का हक परमात्मा ने अपने हाथ में रखा है परमात्मा के घर में यह गुनाह कभी भी बख्शा नहीं जाता। जो आदमी किसी "साधु" को, किसी "संत" को मारता है वह कब बख्शा जायेगा? वह तो किसी जन्म में भी बख्शा नहीं जायेगा। इसलिये "महाराज दर्शन दास जी" ने कहा है कि, "मेरे नानक के घर में सबकी इच्छायें, मनोकामनाएं पूर्ण हुई है" आप दोबारा यहाँ पर अगले बुद्धवार सत्संग रखो। जहाँ एक महीने बाद सत्संग होता था वहाँ अगले सप्ताह सत्संग फिर रखने के लिये कहा। सेवकों ने पूछा कि महाराज जी, ऐसा किस लिये है तो महाराज जी उन व्यक्तिओं को सुना कर कहते हैं कि यहाँ कुछ व्यक्ति ऐसे आये हैं जिनकी मनोकामना पूरी नहीं हुई हैं। हम उनकी मनोकामना भी पूरी करना चाहते हैं, अगले सप्ताह सत्संग रखा गया। वह व्यक्ति गोली मारने के लिये आये। महाराज जी हंसते रहे। सारा सत्संग Blood के ऊपर किया कि किसे मारने का क्या पाप है किसे मारने का क्या पाप है भाव अपनी ओर से सब कुछ बताते भी जा रहे हैं। उसके बाद कुर्सी पर बैठ गये हैं और कहते हैं कि कोई सवाल-जवाब करो। कई जीव प्रश्न करने लग गये। एक माई कहती है कि महाराज जी बहुत समय के पश्चात मैंने हिन्दुस्तान जाना है आप बताओ कि वहाँ की कौन सी चीज़ खास है जिसे मैं वहाँ जाकर देखूं। महाराज जी बहुत हंसे और कहते हैं कि बेटा, हिन्दुस्तान सारा ही बहुत खास है। जब आप प्लेन से उतरेंगी, हिन्दुस्तान की धरती को माथा टेक देना। वहाँ की धूड़ी उठा कर अपने माथे पर लगा लेना। वह मेरे गुरूओं की धरती है।

वह संतों की, ऋषि-मुनियों की धरती है। वह पीरों-पैगम्बरों की धरती है। उस धरती पर जितनी भी मिट्टी है समझो, वह मेरे सतगुरूओं की चरन धूल है। यह तो एक सोच है कि कितने समय से इस धरती पर संत-महापुरूष, देवी-देवता, पीर-पैगम्बर आते रहे हैं। वह मेरे रब्ब की धरती है। एक माई सवाल करती हैं कि महाराज जी, मैं लहसुन खा लिया करूं? महाराज जी कहते है कि माता, झूठ तो आप रोज़ खाती हैं लहसुन खा लोगी तो फिर क्या हो जायेगा? किसी ने सवाल किया कि महाराज जी, मौत क्या होती है? महाराज जी कितनी देर तक हंसते ही रहे सवाल सुन कर, फिर कहते हैं कि माता, जिसने मरना है अभी आपके सामने मर जाना है। अपनी आँखों से देख लेना। जो अपने बारे में यह बता रहे हैं कि जिन्होंने मरना है, अभी मर जाना है। अपनी आँखो से देख लेना, उसके बावजूद भी वह आदमी गोली मारने के लिये सामने आये हैं। जबकि महाराज जी ने यह भी कहा हुआ है कि हमें सामने से कोई भी गोली नहीं मार सकता। कोई पीछे से गोली मारेगा, तब लगेगी। जिस प्रकार शेर का शिकार कोई सामने से नहीं कर सकता, उसी प्रकार हमें कोई सामने से गोली नहीं मार सकता। यह सब कुछ जानते हुए भी उन्होंने सामने से ट्राई किया कि यह आम बात है। यह कैसे हो सकता है? शरीर तो शरीर है, गोली तो यह नहीं देखती कि यह किसका शरीर है। इसे पक्के वचन, पक्के बोल, पक्की वाणी कहते हैं महाराज दर्शन दास जी की वाणी पक्की वाणी है। दुनिया की कोई ताकत उसको कच्ची वाणी नहीं कह सकती। जो जीव ऐसे महापुरूषों की वाणी को कच्ची वाणी कहते हैं, हम कहतें हैं कि वो कच्चों से भी कच्चे हैं। अभी उन्हें वाणी का अर्थ ही समझ में नहीं आया कि वाणी क्या होती है? उन्हें नहीं मालूम कि पक्के "संत" कौन होते हैं? उनके वरदान क्या होते हैं? उन्होंने गुरूवाणी का, धार्मिक ग्रथों का व्यापार किया है उन्होंने धार्मिक ग्रंथों से प्रेम नहीं किया है। वह लोग केवल पैसे की खातिर उन्हें पढ़ते हैं। संत-महात्मा प्रेम में पढ़ते हैं और उसके अनुसार जीवन ढालते हैं एक-एक अक्षर के ऊपर अमल करके उस पर चलते हैं। इतनी गहरी गुरूवाणी का अर्थ केवल वही बता सकता है जो संत इतनी गहराई में जाने वाला होगा। हर जीव उसका अर्थ नहीं जान सकता। गुरू नानक पातशाह ने इतनी गहरी बाणी की रचना की है। कोई गुरू नानक पातशाह जैसा होगा, वही गुरू नानक पातशाह की बाणी का अर्थ बता सकता है। कोई महाराज दर्शन दास जैसा होगा, वह उनकी बाणी का अर्थ बता सकता है। हर जीव को कैसे समझ आ सकती है? कहाँ युगों का, करोड़ों जन्मों का तप है महापुरूषों का, ऐसे पूर्ण गुरूओं का, कहाँ कल का जीव उठ कर उसका अर्थ बताने लगे, यह कैसे हो सकता है? इस कारण गुरू ग्रंथ

साहब, भगवद् गीता, रामायण, कुरान, यह केवल संतों की वाणी है संत ही इसके अनुसार चल सकते हैं। साधारण जीव केवल माथा टेक सकता है। उस पर चल नहीं सकता। जो चलते हैं, वह उसका अर्थ जानते हैं, उसके रंग को जानते हैं। उन को सिर तलियों पर रखना पड़ता है। उनके लिये दुःख-दर्द कुछ नहीं है। उनको इतना पता है कि हमारे सांई के हुक्म के बिना कहीं पत्ता भी नहीं हिल सकता है। जब वह हुक्म करेगा तो पत्ता हिलेगा, नहीं तो नहीं हिलेगा। हमने महाराज दर्शन दास जी के द्वारा practical करते हुए देखा है। अपनी मौज में बैठे हैं पास सेवक भी बैठे हैं तेज हवा चल रही है किसी सेवक ने सवाल कर दिया कि यह वाणी कहाँ तक सच है कि उसके हुक्म के बिना पत्ता नहीं हिलता। महाराज जी कहते हैं कि यदि वह हुक्म कर दे कि नहीं हिलना, तब नहीं हिलता, उसका हुक्म है तब हिलते रहते हैं। सेवक पूछते हैं कि महाराज जी कुछ बताओ कि कैसे नहीं हिलते। इसी बीच "राम लुभाया" नाम का सेवक सामने से चला आ रहा है। आकर वह माथा टेकने के लिये अभी आधा ही झुका है कि उसी समय महाराज जी कहते हैं कि राम लुभाया, तुम्हें हुक्म है कि जहाँ हो बस वहीं रहो। आप देखें कि जैसे कोई बुत होता है। उसका न तो कोई कपड़ा, कमीज इत्यादि हिल रही है और न ही वहाँ छप्परों के पास के पेड़ों का कोई पत्ता हिल रहा है। महाराज जी इतनी बात कह कर फिर बातें करते जा रहे हैं। यह नहीं कि वह ध्यान में बैठ गये हैं। सेवकों से कहते हैं कि कोई और बात करो। सेवकों के सवालों के उत्तर देते जा रहे हैं। लगभग डेढ़ घंटे बाद कहते हैं कि राम लुभाया, तुम्हें हुक्म है कि तुम अब माथा टेक सकते हो। वह एकदम ऐसे हिले कि जैसे कई जन्मों से वह बुत बने हुए थे और उसमें फिर से आत्मा डाली गई हो। जैसे उसे दोबारा से सजीव किया गया हो। महाराज जी कहते हैं कि यह है उसके हुक्म के बिना पत्ता नहीं हिलता। आँधी चल रही है लेकिन कोई पत्ता नहीं हिल रहा है। उन्होंने तो एक-एक लाईन को practical करके दिखाया जैसे हम किताबों में पढ़ते हैं कि चाय बनानी है। चाय पत्ति डालेंगे, मीठा डालेंगे, इतना पानी डालेंगे, इतना दूध डालेंगे 2 लौंग, इलायची डालेंगे, आग पर रख कर इस प्रकार उबालेंगे, तब चाय बनेगी। वह केवल चाय की बात की जाती है practical यह है कि उतनी, उतनी हर वस्तु डाल कर चाय बना कर बताया जाता है। पूर्ण संतो के दरबार में और साधारण दरबार में यह अन्तर होता है। पूर्ण संत यह कहते हैं कि यदि आप "गुरूवाणी" को पढ़ते हैं तो उसके अनुसार चलो, उसके एक-एक अक्षर का तत्त निकालो। उसका "सत्त" निकालो, उसको अपने अन्दर धारण करो। फिर चाय बना कर देखो कि कैसी बनती है। ऐसे नहीं, केवल पढ़ने की बात नहीं है। केवल चाय की बात नहीं है बना

कर यह देखो कि चाय बनती कैसे है? उसकी युक्ति आनी चाहिये। वह युक्ति कोई गुरू, कोई योगी बतायेगा, तब युक्ति प्राप्त होती है। तेल के साथ मालिश करके कोई पहलवान नहीं बन जाता। दूध-घी खा कर मोटा हो सकता है लेकिन दावपेंच कोई उस्ताद ही बताता है। एक पतला सा पहलवान जा कर बड़े पहलवान को गिरा देता है। उसको बाद में आदमी पूछता है कि आपने यह दांव कहाँ से सीखा है इतने बड़े आदमी को आपने गिरा दिया है? वह कहता है कि मेरे उस्ताद ने बताया था। मेरे गुरू ने बताया था। भाव गुरूवाणी में जितने दावपेंच हैं यह केवल वह जानते हैं जिन्होंने गुरूवाणी के अनुसार अपना जीवन ढाला हुआ है। जो उसकी सच्ची याद को लेकर, उस जोत से अंतर से मिल गये हैं, समझो कि वही बता सकते हैं। गुरूवाणी क्या ताकत है यह केवल "संत" जानते हैं। हर साधारण आदमी इसके बारे में नहीं जान सकता। इस कारण, उस समय जब महापुरूषों ने गुरूवाणी लिखी, तो कुछ मनमुख लोगों ने कहा था कि गीत लिख रहे हैं। हुजूर ने उस समय फिर वाणी में एक रचना की "लोग जाणें ये गीत हैं ये तो ब्रह्मविचार" लोगों के लिये यह गीत हैं लेकिन यह ब्रह्म का विचार है। यह तो ब्रह्म से भी आगे की बात है।

पारब्रहमि जिसु कीनी दइआ॥
बाह पकड़ि रोगहु कढि लइआ॥
तूटे बंधन साध संगु पाइआ॥
कहु नानक गुरि रोगु मिटाइआ॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-1140-41

जिसके ऊपर पारब्रह्म भाव "परमात्मा," जो ब्रह्म से भी आगे की ताकत है "निरंकार" रूपी ताकत है वह दया कर दे, समझो कि उसको "गुरू" मिलता है जो साधु का संग करके इन युक्तियों को पा सकता है उसकी बांह पकड़ कर "वह" उन्हें बाहर निकालता है। वही जीव भव सागर से पार उतरता है। इसलिये, यह जो शबद रचना है इसमें उन हस्तियों की महिमा की गई है। उन शक्तियों की महिमा की गई है उनके वचनों की महिमा की गई है उसकी वाणी की महिमा की गई है उसके वरदानों की महिमा गाई गई है। देवी-देवताओं की वडियाई की गई है। क्योंकि अन्दर जा कर जो नज़र आयेगा, उसकी महिमा गाई जायेगी। उस महिमा में ही "सत्त" होता है। किसी

आम आदमी की आप कितनी महिमा गा सकते हैं? कैसे गा सकते है? झूठी महिमा करते हुए आपके मन में आयेगा कि मैंने वैसे ही उसकी प्रशंसा कर दी है वह आदमी तो और अधिक अंहकार में आ जायेगा। लेकिन उस मालिक की महिमा "सत्त" से भरी हुई होती है जिसमें सरूर ही सरूर है। खुमारी है जिसमें नाम का नशा है। उसकी महिमा गाने के लिये स्वंय को वैसा बनाना पड़ेगा। वह सोच बनानी पड़ेगी कि हमने उसकी महिमा गानी है। जिससे अन्दर वैराग पैदा हो, तड़प पैदा हो, उदासी अवस्था मिले, कि मन खामोश हो जाये। मन का टिकाव हो जाये। एकाग्रता बन जाये, लिव जुड़ जाये। वह अवस्था बन जाये। वैरागी अवस्था, उदासी अवस्था, त्यागी अवस्था कि आप अपना सब कुछ त्याग सको। भाव अपने शरीर को भी त्याग सको। अपने आप पता नहीं कितनी दुनिया मरना चाहती है लेकिन मरती क्यों नहीं है? हर आदमी जब दुखी होता है, परेशान होता है, कलपता है कि परमात्मा, मुझे उठा ले, चाहे वह आदमी औलाद से ही परेशान होता है लेकिन वह उठाता तो नहीं। हर जीव अरदासें करता है कि मेरा शरीर छूट जाये, मैं इस में से निकल जाऊँ, लेकिन किसी से भी निकला नहीं जाता। इस शरीर को वही त्याग सकता है जो त्यागी होगा। जिसकी त्यागी अवस्था होगी। वह केवल यह शरीर ही नहीं सरबंस ही त्याग देता है। लेकिन उससे पहले विकारों को त्यागता है मन माया को त्यागता है उसके बाद श्वासों को निकालता है। शरीर को त्याग देता है जब मर्जी चले गये जब चाहा आ गये। अपने घर बैठे-बैठे ही जितने मर्जी देशों में घूम आये। जब "शबद-सुरत" ही हो गये, आगे निकल गये, जहाँ चाहें उडारी मारते रहें। बात तो यह है कि "शबद-सुरत" होने की युक्ति क्या किसी ने पाई है या नहीं पाई? इस कारण जिन्दगी का कर्म यह है कि हम शबद सुरत होना सीखें। ताकि हमारी जिन्दगी का कर्म पूरा हो जाये। हम जीवित रहते अपने 'सतगुरू' से, उस जोत से वसल कर जायें, जो परमात्मा की जोत है। वरना उस से पहले कभी कहीं, कभी कहीं, समझो कि वह अवस्थाः

मन कुत्ता दर दर फिरे,
दर-दर दुर दुर होए,
वे तूं इको दर दा हो के बैजा,
तैनुं दुर दुर ना आखे कोए॥

शायर ने मन को कुत्ता कह कर याद किया है। वह एक ग्रास के लिये दर-दर घूम रहा है। वह कहते हैं कि किसी एक के हो जाओ जिस पर आपको विश्वास हो गया

है कि यह "दर" वास्तव में उस परमात्मा का "दर" है। आप प्रेम की आँख से देखो। आपको कुछ भी कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। आपको यदि विश्वास हो गया तो समझो, वह विश्वास एक 'सच' की ताकत है:-

आदि सचु, जुगादि सचु॥
है भी सचु, नानक होसी भी सचु॥

एक हकीकत है। आपके अंतर से जब उससे मिलने की "हूक" पैदा होगी, वह "हूक" हकीकत बनेगी। फिर समझो, जब हकीकत आपके अन्दर पैदा हो जायेगी, आप "अहक" में जा कर समा सकते हैं। आपको उसके घर जाने का "हक" मिल जायेगा। जिसे हम "सचखण्ड" कहते हैं फिर आपका अंतर का रास्ता खुलेगा। जिन्दगी का असल आनन्द ही तब है। उस से पहले जिन्दगी का कोई आनन्द नहीं है। उस से पहले जिन्दगी बेकार है। संत-महात्मा जीना सिखाते हैं कि जीवन किस प्रकार जीना है। जीने के लिये उसका चरणामृत चाहिये। उसका शबद रस चाहिये जिसे "अमृतरस" कहा गया है। जिसे "सत" कहा गया है। उस "सत" का रस पीने के साथ ही आप जीवन में उस प्रकार जी सकते है जैसे पूर्ण संतो, गुरूओं ने जीना सिखाया है। हुजूर महाराज दर्शन दास जी का यही सन्देश है जो इस शबद के द्वारा मालिक ने हमें दिया है हमारे खसम ने, वह सन्देश "शबद" के द्वारा भी, सत्संग के द्वारा भी जो दिया गया है वह दाते का सन्देश है। यदि हम उसके अनुसार चल पड़ें, वह आपके लिये भी उतना ही है, मेरे लिये भी उतना ही है। वह मुसलाधार बरसात सबके लिये बराबर है। हम जितना इसे ग्रहण कर जायें उतना ही लाभ है। इस कारण, यदि सत्संग समझ आ जाये, तो सत्संग देने वाला जो दाता है वह बाकी कारज अपने आप कर देता है। उसे कहने की आवश्यकता नहीं होती। वह यकीन, विश्वास अपने अन्दर पैदा करें। यदि "शबद" नहीं है तो प्राप्त करें। उसके साथ जुड़ें, ताकि आपको अन्दर से "सत्त" मिले। "नाम शबद" का रस मिले। जीवन ऊँचा सुच्चा और नेक बन जाये। यहीं समाप्ति है क्योंकि जीवों की आदत नहीं जाती वह सोचते हैं कि किसी प्रकार सत्संग बंद हो जाये, देर हो गई है। यह प्रेम वाला काम नहीं है। यह व्यापार वाला काम है। इस प्रकार बात नहीं बनती। जब प्रेम हो जाता है फिर चाहे रात निकल जाये, दिन निकल जाये कोई बात नहीं। प्रेम में परमात्मा है। जो जीव सिमरन पर बैठते समय भी यह सोच कर बैठतें हैं कि मैनें आठ बजे उठना है। उनकी सुरत कभी नहीं लग सकती। क्योंकि उनकी सुरत "आठ बजे" में लगी हुई है कि मैंने आठ बजे उठ

कर, उस जगह पर जाना है। जिन का विचार यह है कि सत्संग इतने बजे बंद हो जाये, ताकि हम यह काम कर सकें, समझो, उनकी सुरत सत्संग में नहीं है उनकी सुरत टाइम में लगी हुई है उनके ऊपर सत्संग का असर कैसे होगा? वह घड़ी की सूई देखनें में लगे है। अब दोष न तो सत्संग देने वाले का है न करने वाले का है। दोष सुनने वाले का है जिनकी सोच उस घड़ी पर टिकी हुई है। सोच ही तो सुरत है। आप सोच को बुरे रास्ते पर लगा लोगे, वह बुरे रास्ते पर चल पड़ेगी। आपके अन्दर बुरे विचार आने लग जायेंगे। अच्छी ओर सोच लगा लोगे तो सोच अच्छी ओर चल पड़ेगी। वही तो सुरत बनती है। सोच गुरू के साथ जोड़ लोगे, समझो, सोच गुरू के रंग में डूब जायेगी। गुरू के विचार पैदा होने लग जायेंगे। जीव गुरू के रंग में रंगा जायेगा। जो आपने सोच बनानी है समझो, उसी से ही सबकुछ होना है। लेकिन यह सत्संग सुनना वास्तव में ही कठिन है क्योंकि तीन घंटे की फिल्म हो तो जीव हिलता नहीं हैं। जहाँ कोई कलाकार आया हुआ हो, जीव पड़ोसियों को भी साथ ले जाता है लेकिन सत्संग में जीव पड़ोसियों को साथ नहीं ले कर जाता। उन को भी पता चल जायेगा कि आप भी संतो के पास जाते हैं। उनको बताना ही नहीं है। यह आदमी की कमजोरी है। सुरत को आप जिधर लगाओगे, उधर लग जायेगी। हमें तो इतना पता होता था कि ड्यूटी पर खड़े होना है तो बस "ड्यूटी" ड्यूटी है उसमें चाहे सोलह घंटे निकल जायें, चाहे अठारह घंटे निकल जायें। हमारा शौक होता था कि महाराज जी के गेट पर ही ड्यूटी मिल जाये, महाराज जी के दरबान बन जायें। महाराज जी के ड्राइवर ही बन जायें। आते-जाते उनके दर्शन तो होंगे। एक दिन खड़े-खड़े अठारह घंटे हो गये महाराज जी कहते हैं कि "बैठ जाओ यार, क्यों भार चढ़ा रहे हो?" हमने कहा कि आपके चरणों में खड़े होने से, आपके ऊपर क्या भार है आप तो सृष्टि के मालिक है। यह तो सेवक का उद्धार है। आप इस तरह न कहो। वह हंस पड़े। कहने का भाव यह है कि भाग्य से कोई सत्संग, हरी कीर्तन, सत्त का मार्ग मिलता है। भाग्य से ही जीव इन में जुड़ता है। पता नहीं किस लाईन ने किसी का उद्धार कर देना है। कौन सी लाईन जीव के अंतर बैठ जानी है पता नहीं किस समय जीव की एकाग्रता बन जानी है जीव का ध्यान लग जाना है। जिस समय ध्यान लग गया, अन्दर रोशनी की किरण पैदा हो गई, समझो, तभी सवेरा है। वरना अंधेरा ही अंधेरा है। इस कारण बाकी सोचें छोड़ दें कि हमने यह बातें करनी हैं यह सोचें ही सुरत नहीं लगने देती। आपकी घरों में भी यही सोचें रहती हैं और गुरू घर आ कर भी यही सोच रहती है। इसका अर्थ यह है कि आपको पहले विश्वास की आवश्यकता है। जिस दर पर आप आ रहे हैं, आपको पहले ये विश्वास लाना पड़ेगा कि क्या

उस दर पर अन्तर्यामिता कार्य करती है? क्या वो अन्तर्यामी हैं? क्या वहाँ पर हमारा कल्याण हो सकता है? हमारी आत्मा का उद्धार हो सकता है? यदि यह विश्वास आ जाये, फिर वहाँ जाना चाहिये, यदि न आये, तो नहीं जाना चाहिये। यह विश्वास जीव के लिये बहुत जरूरी है। जब प्रेम अवस्था में आओगे, तब आपको वह विश्वास, यकीन मिलेगा। फिर आपको बात करने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

विणु बोलिआ सभु किछु जाणदा
किसु आगै कीजै अरदासि॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-1420-21

अरदास किसके आगे करनी है? वह तो बिना बोले ही सब कुछ जानता है। आपको केवल विश्वास करने की और सत्संग के साथ सुरत जोड़ने की आवश्यकता है। "शबद" के साथ सुरत जोड़ने की जरूरत है। जिन्होंने "शबद" लिया हुआ है और कभी उस का सिमरन ही नहीं किया, तो उनको क्या पता कि "शबद" क्या होता है? जिसने कभी शबद के साथ सुरत जोड़ने की कोशिश ही नहीं की उसे न तो अपना पता है और न ही अपने गुरू के बारे में पता है कि वह सुरत कैसे लगाते हैं। आज भी हमने यहाँ देखा है। इसी बात पर याद आ गया, कि चलो, हम पिछली बार नहीं आये, बाहर गये हुए थे। हमने सोचा कि पिछले जो कुछ काम संगतों के हैं वह यहाँ ध्यान में बैठकर कर लेते हैं। दूसरी ओर जीव बातचीत कर रहे हैं लंगर बन रहा है हम यहीं बैठ जाते हैं। हमने यह देखा है कि करीबी सेवकों को, मैनेजमैन्ट कमेटी में रहने वाले व्यक्तिओं को यह नहीं पता कि ध्यान अवस्था क्या होती है। पंचम पातशाह एक बार गद्दी पर बैठे हैं। वह अपने ध्यान में थे। किसी सेवक ने आकर चरणों में माथा टेक दिया, वह हिल गये, सुरत टूट गई। कहते हैं कि जिन बादलों में से बरखा की ठंडी-ठंडी फुहार पड़ती है जो हरियाली देती है। उन बादलों में से किसी समय कड़कती हुई बिजली भी गिर पड़ती है। जो सम्पर्क में आने वालों को समाप्त कर देती है। पंचम पातशाह, इतने बड़े गुरू, उनके मुख से सहज स्वभाव निकला कि जा, तेरी जड़ें ही जायें। क्योंकि वह किसी का काम कर रहे थे। बहुत बड़ा काम था उसे सँवार रहे थे। उन्हें हिला दिया गया। बाबा बुड्ढा जी ने देखा जो पास बैठे थे कि यह जीव तो मारा गया। "जड़ें जाने" का अर्थ है उसकी तबाही हो गई। बाबा बुड्ढा जी

कहते हैं कि आपने बिल्कुल सच कहा है। यह आपका सेवक है आपके चरनों पर इसने माथा टेका है। इस की जड़ें जायें, इतनी लम्बी, कि पाताल तक चली जायें। यदि कोई दुश्मन भी उखाड़ने लगे तो उखाड़ी न जा सकें। भाव उन्होंने उस श्राप को वरदान में बदल दिया। पंचम पातशाह बाबा बुड्ढा जी की ओर देखकर कहते हैं कि बाबा जी आप वास्तव में रूहानी अवस्था में माहिर हैं। आपकी सुरत वास्तव में अन्दर तक गहरी जाती है। कि यदि मुख से सहज स्वभाव बात निकल गई है जब ध्यान टूटा, कि तुमने सारा काम खराब करके रख दिया है। लेकिन आपने उस श्राप को वरदान में बदल दिया है। जाओ, अब ऐसे ही होगा कि इसकी जड़ें इतनी गहरी चल जायेंगी कि इसको कोई उखाड़ने लगेगा तो उखाड़ नहीं सकेगा। इसे कहते हैं रूहानियत को समझना। संगत करना और बात है, संगत की रंगत को ग्रहण करना और बात है। जो जीव केवल बाहरी कामों तक ही रहते हैं, वह संगत का रस नहीं ग्रहण कर सकते। उनको रूहानियत का पता ही नहीं है। इसका अर्थ है कि वह सुबह उठ कर स्नान करके उसकी याद में नहीं बैठते। उन्हें "नाम शबद" का पता ही नहीं है उन्हें केवल गिले, शिकवों का पता है। न "गुरू" का पता है न ही सेवकी नाते का पता है। न "शबद" का पता है न ही "सुरत" का पता है। उन्हें कैसे पता होगा जिन्होंने कभी अभ्यास ही नहीं किया है। "शबद-सुरत" होना, यह इस घर की मर्यादा है। गुरू घर का उसूल है। गुरू घर की रहतों में रह कर अपनी सुरत को शबद के साथ जोड़ना, यह सबसे जरूरी है। जिससे जीव का जीवन ऊँचा सुच्चा बनता है जीव का उद्धार होता है। जीव जीवित रहते अपने शरीर को खाली कर सकता है दसम द्वार पर जा सकता है। "संत" मत का असली मकसद जीव को अंतर से "सत्त" के साथ जोड़ना है "सत्त" देना है ताकि जीव को सरूर मिले। जीव की आत्मा को बल मिले, आध्यात्मिक शक्ति मिले। वह "शबद-सुरत" होगा तब वह अन्दर से मिलेगी। वरना जिन्दगी में कलपना ही है। कोई लाभ नहीं है। करीब होने का अर्थ है कि सेवक का चेहरा, उसकी आँखे, उसके गुण, उसका उठना-बैठना, उसकी चाल-ढाल से यह पता चले कि यह वास्तव में उन संतों का सेवक है। किसी पहुँचे हुए गुरूओं का सेवक है। उसकी जिह्वा पर वह "रस" हो, वह "सत्त" हो, पता चले कि यह वास्तव में वचनों का पक्का है। दूसरा देखने वाला व्यक्ति कहे कि इसके अन्दर से पता चलता है कि यह किसी पहुँचे हुए संतो का सेवक है। यदि वह व्यक्ति गुरूओं को भी जानने वाला होगा तो कहेगा कि आपके गुरू तो बहुत ऊँचे, सच्चे हैं उनका बहुत नाम सुना है लेकिन आपकी आदतें तो बदली नहीं है। इस का अर्थ है कि आप उन से भी कुछ ग्रहण नहीं कर सके। आप उनके भी नहीं बन सके, जो वह देने के

लिये आये, आप वह नहीं ले सके, आप और किसी के क्या बनोगे? जैसे कह देते हैं कि तुम अपने माता-पिता के नहीं बने, और किसी के क्या बनोगे? भाव गुरू का जीव वह है जो गुरू की मर्यादा में है जो रहतों, उसूलों में है। जिसको गुरू गोबिन्द सिंह महाराज जी ने भी कहा है कि,

रहत पिआरी मुझ कउ,
सिख पिआरा नाहि॥

मुझे केवल सेवक ही प्रिय नहीं है मुझे 'रहत' प्यारी है।

रहणी रहै सोई सिख मेरा।
ओहु ठाकुरु मै उस का चेरा॥

रहितनामा भाई देसा सिंह जी

इतना मान इतनी वडियाई अपने सेवक को दे दी है कि जो मेरी रहतों में रहेगा, मैं उसको अपने साहिब के जैसे जानूंगा। वह मेरे साहिब का रूप है। जो रहतों से बाहर है वह नहीं। इस कारण हम पहले इस दरबार को जानें। यदि यहाँ पर सच्चे मन से आओगे तब सच की पहचान होगी। उसके कहे अनुसार चलोगे तब अन्दर सुरत जुड़ेगी। फिर बाहरी कोई भी बातचीत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। आप अपने घरों में बैठ कर भी सुरत जोड़ कर प्रश्न का उत्तर पा सकते हैं। असल में इसे ही "संत मत" कहा गया है। यदि कोई सच्चा सेवक बने, तब संत का पता चलता है कि संत क्या है? यदि 'संत' पर विश्वास हो तो सेवकी नाता उभर कर सामने आता है। शबद के साथ सुरत जोड़ने की कोशिश करें तो कृपा होती है सुरत जुड़ती है जब जुड़ जाये तब जीव स्वंय जोगी बन जाता है। जोगी ही सतगुरू का रूप बनता है और सतगुरू जोगी में समा जाता है। ऐसे गुणों को धारण करें। इस दरबार को समझें, महाराज दर्शन दास जी कहा करते थे कि आप रोज-रोज क्या लेने आते हो? यदि संसारिक कामों की बातचीत करनी है तो घर बैठ कर सिमरन करो। घर बैठे याद करोगे तब भी आपके काम हो जायेंगे। आओ, यदि हरी कीर्तन, सत्संग सुनना है। अध्यात्मिक बल बढ़ाना है तो रोज आओ। यदि अंतर सुरत जोड़ने की युक्तिआं सीखनी हैं तो रोज आओ। हीर रांझे का नाम यूं ही गुरू ग्रंथ साहब में नहीं आया है बुल्लेशाह ने कहा है कि,

रांझा रांझा करदी नी मैं आपे रांझा होई,
नी कुड़ियो मैंनू आखो रांझा,
हीर न आखो कोई॥

सेवक "तू-तू" करता यदि "तू" का रूप न बना, "मैं" का मैं ही रह गया तो फिर उसने कुछ नहीं पाया। कबीर साहब कहते हैं कि,

कबीर तूं तूं करता तू हूआ
मुझ महि रहा न हूं॥
जब आपा पर का मिटि गइआ
जत देखउ तत तू॥

आदि ग्रंथ पृष्ठ-1375

फिर चारों ओर वह "तू ही तू" नजर आयेगा। यदि सेवक वास्तव में सेवक बन जायें, श्रद्धा-प्रेम ले आये। तब बात बनती है। आज ज़रा रात तक सत्संग चलने दो ताकि महीने का कोटा तो पूरा हो जाये। जो जीव घर पर सिमरन नहीं करते, उनको ऐसे ही करवाना पड़ता है। जैसे कई बार बच्चे को जबरदस्ती दवाई पिलानी पड़ती है। यहाँ भी इसी प्रकार करना पड़ेगा। जब संगत अन्दर आ जाये, गेट को ताला लगा दो, साथ-साथ शबद कीर्तन भी चलेगा। चलो, इस बार छोड़ देते हैं। अगली बार ऐसा ही होगा। यह न हो कि आप अगली बार आओ ही न, कि वहाँ पर पता नहीं क्या होना है। साध संगत जी, समय पर आना, तभी समय से छुटकारा होगा।

नानक नाम चढ़दी कला,
तेरे भाणे सरबत दा भला॥

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: https://store.prowesspub.com